जैन - दर्शन.

Q. Explain the Jaina Theory of Bondage and Liberation?

जैन-दर्शन के अनुसार बंधन और मोक्ष का विचार स्पष्ट करें।

Ans. भारतीय दर्शन के अनुसार बंधन का अर्थ जन्म ग्रहण करना तथा हरेक प्रकार के दुखों का सामना करना तथा जन्म-जन्मांतर भटकते रहना है।

जैनों ने जीवों को अनन्त माना है तथा अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति और ~~अनन्त~~ अनन्त आनन्द को जीव का पूर्णताएं माना है। परन्तु बंधन की अवस्था में सारी पूर्णताएँ ढक दी जाती हैं। जिस प्रकार बादल सूर्य की किरण को अपने में छिपा लेती है। इसी प्रकार बंधन के भी आत्मा के स्वाभाविक गुणों को ढक लेती है। प्रश्न उठता है कि आत्मा किस प्रकार बंधन में आती है? जैनों के मतानुसार जीव शरीर के साथ संयोग करता है, पुदगल से शरीर की रचना के कारण जीव पुदगल से ही संयोग करता है। अज्ञानता वश जीव में वासनायें निवास करने लगती है। वासनायें मुख्य चार है- (i) क्रोध, (ii) मान, (iii) लोभ और (iv) माया। इन वासनाओं से अभिभूत होकर जीव शरीर के लालायित रहता है। जिसके कारण इन्हें 'कषाय' कहा जाता है। जीव अपने कर्म के अनुसार पुदगल कणों को अपने ओर आकृष्ट करता है, जो पूर्वजन्म के अनुसार निश्चित होता है। अतः शरीर की रूपरेखा कर्मों के अनुसार निश्चित होती है।

जैनों ने अनेक प्रकार के कर्मों को माना है जिसे फल के अनुसार नाम दिया जाता है। आयु निर्धारित करनेवाले को 'ज्ञानावरणीय कर्म', आत्मा की स्वाभाविक-

शक्ति को रोकनेवाले को 'अन्तराय कर्म', उच्च तथा निम्न परिवार में जन्म निश्चित करने वाले को 'गोत्रकर्म' और जो सुख-दुख की वेदना उत्पन्न करते हैं उन्हें 'वेदनीय कर्म' कहा जाता है।

इस अवस्था को जब कर्म-पुद्गल आत्मा की ओर प्रवाहित होते हैं 'आस्रव' कहा जाता है। आस्रव जीव को स्व-नष्ट का बंधन की ओर ले जाता है, जब वे पुद्गल कण जीव में प्रविष्ट हो जाते हैं तब इस अवस्था को बंधन कहा जाता है। बंधन दो प्रकार का होता है।

(1) भाव बंधन (Ideal Bondage).

(2) द्रव्य बंधन (Real Bondage)

(1) भाव बंधन — जब आत्मा में चार प्रकार की प्रवृत्तियाँ निवास करने लगती हैं तो उसे हम भाव बंधन की संज्ञा देते हैं।

(2) द्रव्य बंधन — हम उस बंधन को कहते हैं जब पुद्गल कण आत्मा में प्रविष्ट हो जाते हैं द्रव्य और पुद्गल कण का संयोग ही द्रव्य बंधन कहलाता है।

भाव बंधन द्रव्य बंधन का कारण है। जैन-दर्शन मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य मानता है। मोक्ष बंधन का विपरीत है। जीव और पुद्गल का संयोग बंधन है तो हम कह सकते हैं कि जीव और पुद्गल का वियोग ही मोक्ष है। मोक्ष की प्राप्ति तबतक नहीं हो सकती जबतक पुद्गल कणों को आत्मा की ओर प्रवाहित होने से रोका न जाये। नये पुद्गल कणों को रोकना ही मोक्ष के लिए पर्याप्त नहीं है, पर कुछ ऐसे पुद्गल कण होते हैं जो आत्मा में बैठे हुये होते हैं। ऐसे पुद्गल कणों को बाहर

निकालना चाहिए। नये पुद्गल कर्मों को जीव की ओर प्रवाहित होने से रोकने की प्रक्रिया को 'संवर' तथा पुराने पुद्गल कर्मों को नष्ट करने की प्रक्रिया को 'निर्जरा' कहा जाता है। कर्म पुद्गल से मुक्त हो जाने पर जीव प्राय: मुक्त हो जाता है।

जैन-दर्शन के अनुसार मोक्ष-प्राप्ति के मुख्य तीन अंग माने गये हैं। जिन्हें त्रिरत्न कहते हैं जो मोक्ष के मार्ग हैं।

(i) सम्यक् ज्ञान (Right knowledge)
(ii) सम्यक् दर्शन (Right faith)
(iii) सम्यक् चरित्र (Right Conduct)

मोक्ष की प्राप्ति इन तीनों में किसी एक के रहने से नहीं हो सकती परंतु इन तीनों को मानना आवश्यक है। तीन मार्ग की महत्ता को प्रमाणित करने के लिए एक रुग्न रोगी का उदाहरण दिया गया है। जिस प्रकार रोगी को डॉक्टर के प्रति विश्वास, उसके दिये गये दवाइयों का सेवन तथा उसके आचरण का पालन करने से ही वह रोगमुक्त हो सकता है। उसी प्रकार मोक्ष-प्राप्ति के त्रिमार्ग का अनुसरण करने से ही मनुष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

(i) <u>सम्यक ज्ञान</u> —

सम्यक ज्ञान उस ज्ञान को कहते हैं जिससे जीव और अजीव के मूलतत्व का ज्ञान हो। जीव और अजीव के भेद को समझना ही सम्यक ज्ञान है। सम्यक ज्ञान की प्राप्ति में कुछ कर्म बाधक होते हैं जिनका नाश होने से ही सम्यक ज्ञान की प्राप्ति होती है।

(ii) <u>सम्यक दर्शन</u> :-

सत्य के प्रति श्रद्धा की भावना रखना ही सम्यक दर्शन कहा जाता है। जो किसी मनुष्य में जन्मजात रहता है और कुछ लोग अभ्यास तथा विचार द्वारा सीख लेते हैं। अंधविश्वासों से मुक्त ज्ञाति ही सम्यक दर्शन की ज्ञाति बन सकता है। अतः सम्यक दर्शन का अर्थ बौद्धिक विश्वास है।

(iii) <u>सम्यक चारित्र</u> :-

हितकर कार्यों का आचरण और अहितकर कार्यों का वर्जन ही सम्यक चारित्र है। सम्यक चारित्र व्यक्ति को मन, वचन और कर्म पर नियंत्रण करने का निर्देश देता है।

सम्यक चारित्र के पालन के लिए निम्नलिखित आचरण आवश्यक हैं :

(1) व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार की सावधानी का पालन करना चाहिए। जैनों के मतानुसार सावधानी पाँच प्रकार की है।

(क) हिंसा से बचने के लिए निश्चित मार्ग से जाना।

(ख) नम्र और अच्छी वाणी बोलना।

(ग) उचित भिक्षा लेना।

(घ) चीजों को उठाने और रखने की सतर्कता

(ङ) शुद्ध स्थानों में मलमूत्र का विसर्जन करना।

(2) मन, वचन तथा शारीरिक कर्मों का संयम आवश्यक है। जैन इन्हें 'गुप्ति' कहते हैं। 'गुप्ति' तीन प्रकार के होते हैं -

(क) काय गुप्ति - शरीर का संयम

(ख) वाक गुप्ति - वाणी का नियंत्रण (संयम)

(ग) मनोगुप्ति - (मानसिक संयम) - इस गुप्ति का अर्थ है स्वाभाविक प्रवृत्तियों पर रोक।